

पाठ 3

ऋचा की कृपा

इस पाठ से हम सीखेंगे—

- अच्छी सेहत के लिए साफ-सफाई की आवश्यकता है।
- बच्चों में साफ-सफाई की आदत डालना माता-पिता की जिम्मेदारी है।
- दूषित पानी से होने वाली बीमारियों की जानकारी।
- सरकारी अस्पतालों से मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी।
- ऋ स्वर और इसकी मात्रा ँ की पहचान।
- र के विविध रूपों की पहचान।

पाठ

बसंती के घर नई बहू आई थी। नाम था ऋचा। ऋचा पढ़ी-लिखी और समझदार थी।

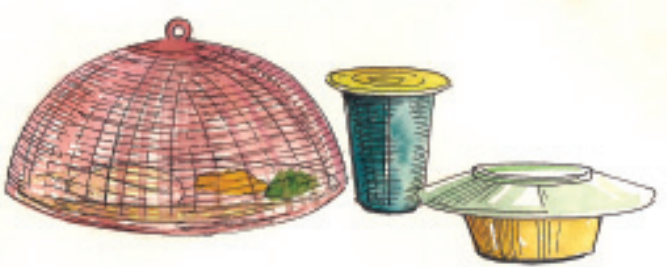
बसंती की बड़ी बहू चंद्रकला के दो बच्चे थे— पुत्र हर्ष और पुत्री मृदुला। दोनों इन दिनों बीमार थे। मृदुला को दस्त लगे थे। हर्ष भी बहुत कमजोर था।

ऋचा ने देखा— उसकी जेठानी साफ-सफाई का कोई ध्यान नहीं रखती थी। बिना हाथ धोए ही बच्चों को खाना खिला देती थी। रसोई में खाना ढककर नहीं रखती

थी। बच्चे नंगे पैर घूमते रहते थे। ऋचा समझ गई कि बच्चों की बीमारी का कारण यही है। मौका पाकर ऋचा ने माताजी से कहा— माताजी, मृदुला को दस्त लगे हैं। इसको डॉक्टर को दिखा दिया जाए।

बसंती— नहीं बहू, इसके दाँत निकल रहे हैं। इसकी वजह से ऐसा हो रहा है।

ऋचा— माताजी, दस्त होने का कारण सिर्फ दाँत निकलना ही नहीं होता। साफ़-सफ़ाई का ध्यान न रखने, गंदे हाथों से खाना खिलाने, गंदा पानी पिलाने से भी दस्त हो सकते हैं।



बसंती— रहने दे बहू, बात मत बना! हमने बच्चे नहीं पाले हैं क्या?

ऋचा ने विनम्र होकर कहा— माताजी, गंदा खाना खाने से, गंदे हाथों से खाना खिलाने से पेट की बीमारियाँ हो जाती हैं। हैज़ा भी हो सकता है, जो जानलेवा होता है। इनसे बचाव के लिए सफ़ाई का ध्यान रखना ज़रूरी है।

बसंती— बहू, तुम्हें तो बहुत जानकारी है।

ऋचा— यह सब हमें ट्रेनिंग में बताया गया था।

बसंती— बहू, फिर हर्ष क्यों कमज़ोर हो रहा है?

ऋचा- माताजी, हर्ष नींद में लार डालता है। दाँत भी किटकिटाता है। इसके पेट में कीड़े हो सकते हैं। पेट में कीड़े नंगे पैर घूमने और गंदगी के कारण भी हो जाते हैं।

बसंती- तो ठीक है, हर्ष और मृदुला दोनों को डॉक्टर के पास ले चलते हैं।

डाक्टर ने वही बातें दोहराई, जो ऋचा ने कही थीं। डॉक्टर ने मल की जाँच कराई। पेट में कीड़े पाए गए। दोनों का इलाज हुआ। दोनों ठीक हो गए।



अब ऋचा खुद दोनों बच्चों का ध्यान रखने लगी। बच्चे हृष्ट-पुष्ट हो गए। जो भी बच्चों को देखता, कहता— बच्चों की सेहत अब बहुत अच्छी है।

बसंती कहती— यह सब छोटी बहू ऋचा की कृपा है।

इनका मतलब जानिए—

शब्द	अर्थ
विनम्र	= प्यार से
मल	= टट्टी

शब्द	अर्थ
हृष्ट-पुष्ट	= स्वस्थ, तंदुरुस्त
सेहत	= तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य

आइए, यह भी जानें—

ऋ स्वर तथा **ऋ** की मात्रा **ॄ** की पहचान और उनका प्रयोग :

- इस पाठ में ऋचा शब्द आया है।

इसमें **ऋ** स्वर का प्रयोग हुआ है।

ऋ से बने कुछ अन्य शब्द पढ़िए—

ऋणी, ऋषि, ऋतु, ऋतुराज, ऋषभ

- पाठ में मृदुला, कृपा, हृष्ट-पुष्ट शब्द आए हैं। इनमें ऋ **की** मात्रा **ॄ** का प्रयोग हुआ है।

ऋ की मात्रा **ॄ** से बने कुछ और शब्द पढ़िए—

संस्कृत, मृत्यु, दृढ़, अमृत

र के रूपों की पहचान और उनके प्रयोग में अन्तर समझिए:

इस पाठ में हर्ष, विनम्र, ट्रेनिंग शब्द आए हैं। इनमें 'र' के अलग-अलग रूपों का प्रयोग हुआ है। ये रूप हैं— **ॠ**, **ॡ** और **ॢ**

अब कुछ और शब्द पढ़िए, जिनमें 'र' के इन रूपों का प्रयोग हुआ है—

ॠ — कर्म, इर्द-गिर्द, गर्दन, ऑर्डर, गर्मी, उर्मिला, निर्धन, आशीर्वाद

ॡ — प्रकार, प्रधान, प्रकाश, ग्राहक, व्रत, विक्रेता, नम्र, प्रेम

ॢ — ट्रक, ट्रैक्टर, ट्रॉली, ड्रम, ड्राइवर, ट्रेन, राष्ट्र, ड्रामा

नोट— **ॢ** का प्रयोग केवल ट, ड, के साथ ही किया जाता है, जैसे— राष्ट्र, ट्रक, ड्रम, ड्राइवर आदि।

अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों में से सही शब्द छाँटकर लिखिए:

कृपा	किरपा	
अमरत	अमृत	
पृथ्वी	प्रथ्वी	
मुर्गा	मुरगा	
गराम	ग्राम	
ड्रम	डरम	

2. नीचे लिखे शब्दों में र के रूपों ॆ, ॆ या ॆ का प्रयोग कर सही शब्द लिखिए:

डम	पकाश	पाण		
काय	वत	दशन	टाली	

3. गोले में दिए गए वर्णों से शब्द बनाइए:

ट्रे ड्र ण मृ अ
का म प्र न र्द
जा कृ ग्रा त
ऋ र पा

जैसे— ट्रेन

.....
.....
.....
.....

ऋण

.....
.....
.....
.....

4. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

(क) बड़ी बहू के बच्चों के क्या नाम थे?

.....

(ख) बसंती ने ऋचा को दस्त होने का क्या कारण बताया?

.....

(ग) ऋचा ने दस्त होने का दूसरा कारण क्या बताया?

.....

(घ) बसंती बच्चों को लेकर कहाँ गई?

.....

(ङ) पेट में कीड़े होने के क्या लक्षण हैं?

.....

आइए, करके देखें—

- नालियों में जहाँ बहुत मच्छर हों, वहाँ पर थोड़ा मिट्टी का तेल डालिए। देखिए, क्या होता है।
- अगर आपके घर का गंदा पानी निकलकर इधर-उधर फैल रहा है, तो घर के बाहर नाबदान बनाइए।
- पीने का पानी और खाने-पीने की चीज़ों को ढककर रखिए।

अब यह जानिए

गंदे पानी तथा गंदे भोजन से पेट की बहुत-सी बीमारियाँ होती हैं, जैसे-दस्त लगना, हैज़ा होना, पीलिया आदि। ये खतरनाक रोग हैं। इनसे बचने के लिए खाना बनाते समय सफाई का ध्यान रखें। खाना ढककर रखें। ताजा खाना खाएँ और खिलाएँ। भोजन बनाने और पीने के लिए साफ पानी का इस्तेमाल करें। बीमारी होने पर तुरन्त डाक्टर को दिखाएँ।

सभी सरकारी व निजी अस्पतालों में गरीबों का मुफ्त इलाज़ होता है। उन्हें जीवन रक्षक दवायें मुफ्त दी जाती हैं। ज़्यादा बीमार को वार्ड में भर्ती किया जाता है। उसका खाना-पीना सब मुफ्त होता है। जनरल वार्ड में मरीजों के टेस्ट मुफ्त किए जाते हैं। गरीबों को एम्बुलेंस की सुविधा मुफ्त मिलती है। अगर कोई व्यक्ति अपने या अपने रिश्तेदार के इलाज़ से संतुष्ट नहीं है तो वह मेडिकल काउंसिल में अपनी शिकायत दर्ज करा सकता है। वह पास के पुलिस स्टेशन में भी शिकायत कर सकता है। इलाज़ में कोताही बरते जाने पर उपभोक्ता अदालत में अर्ज़ी दी जा सकती है।